सोमवती अमावस्या - 15 जून 2026 / महेश नवमी - 23 जून 2026 / सवार्थ सिद्धि योग

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः

मन ही बंधन और मोक्ष अर्थात् आनन्द का कारण है...

चन्द्रमौलिश्वर शिव साधना

ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव और मन के माध्यम से उनका नियंत्रण

ग्रह और नक्षत्र केवल आकाश में घूमने वाले पिंड नहीं हैं, बल्कि वे ऊर्जा के स्रोत हैं, जो निरंतर मानव मन-मस्तिष्क को प्रभावित करते रहते हैं।

'ग्रहा मनसो भावः'

ग्रह मन के भावों को प्रभावित करते हैं।

ग्रह मनुष्य को सीधे प्रभावित नहीं करते, बल्कि वे हमारे विचार, भावनाएं और प्रतिक्रियाएं प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए चन्द्रमा - मन, भावनाएं, मंगल - क्रोध, ऊर्जा और इसी प्रकार शनि - धैर्य, भय, कर्मफल को प्रभावित करते है।

चन्द्रमा अशांत है, तो मन चंचल होगा। यदि मंगल उग्र है, तो व्यक्ति जल्दी क्रोधित होगा। शनि की प्रतिकूलता अधैर्य को बढ़ायेगी। महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या मनुष्य इन प्रभावों का दास है? उत्तर है नहीं, यदि मन पर नियन्त्रण है।

'समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते'

जो सुख-दुःख में समान रहता है, जिसका अपने मन मस्तिष्क पर पूर्ण नियन्त्रण है वही आनन्द अवस्था को प्राप्त करता है।

ग्रह तब अधिक प्रभावित करते है जब - ✲ मन अस्थिर हो, ✲ व्यवहार प्रतिक्रियाशील हो, ✲ भावनाएं अनियन्त्रित हो ✲ भय, क्रोध, मोह की अधिकता हो।

'मुझे क्रोध आ रहा है', यह चिन्तन ही गलत है, जबकि 'मेरे अंदर क्रोध उत्पन्न हो रहा है' और मैं इसका शमन कर सकता हूं, संयमशील चिन्तन है जो स्थिर मन मस्तिष्क से ही संभव है। यही अंतर नियंत्रण की शुरुआत है जो चन्द्रमौलिश्वर की कृपा से ही संभव है। जब हम तुरंत प्रतिक्रिया नहीं देते, बल्कि अपने मन को देखते हैं, तब ग्रहों का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है।

शिव का चन्द्र मौलिश्वर सिद्धांत

चन्द्र अर्थात् मन और शिव अर्थात् चेतना का स्वरूप। जब शिव चन्द्र को अपने मस्तक पर धारण करते हैं, तो इसका अर्थ है-

'मन मेरे नियन्त्रण में है, मैं मन के नियन्त्रण में नहीं हूं'

यही अवस्था साधना का लक्ष्य है और इसी से ग्रहों के प्रभाव को निष्प्रभावी किया जा सकता है।

'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः'

जब चित्त की वृत्तियां रुक जाती हैं, तब ग्रहों का प्रभाव भी रुक जाता है, क्योंकि उनका प्रवेश द्वार ही बंद हो जाता है।

शनि की साढ़े साती का प्रभाव सभी पर एक समान नहीं हो पाता है क्योंकि जो व्यक्ति शनि की साढ़े साती से डरता है, चिंता करता है उसके कष्ट बढ़ते जाते है। वही जो व्यक्ति धैर्य रखता है, मेहनत करता है, कर्म पर ध्यान देता है शनि की साढ़े साती में भी सफलता प्राप्त कर लेता है। इसी कारण ग्रह दशा समान होने पर भी उसके परिणाम अलग-अलग लोगों पर अलग अलग होते है।

❊ ग्रह मन को प्रभावित करते हैं।

❊ मन चेतना को प्रभावित करता है।

❊ चेतना व्यवहार को प्रभावित करती है।

और जब साधक की चेतना में शिव स्थापित हो जाते है, **'चन्द्रमौलिश्वर'** स्थापित हो जाते है तो चेतना मन से प्रभावित नहीं होती, चेतना मन के नियन्त्रण में नहीं बल्कि मन चेतना के नियन्त्रण में आ जाता है और ग्रहों का प्रभाव, ग्रहों का उत्प्रेरक तत्व साधक को प्रभावित नहीं कर पाता है।

ग्रह और नक्षत्र प्रत्येक व्यक्ति के मन को प्रभावित करते हैं और जो मन को नियंत्रित कर लेता है, वह ग्रहों के प्रभाव से भी ऊपर उठ जाता है। चन्द्रमौलिश्वर शिव का साधक मन को साध कर जीवन में सन्तुलन को प्राप्त कर लेता है। तब ग्रह उसके जीवन में बाधक नहीं बल्कि मार्गदर्शक बन जाते है।

मन को नियन्त्रित कर ग्रहों के दुष्प्रभाव को समाप्त करने की ही साधना है - चन्द्रमौलिश्वर साधना। इस साधना के बल पर वह व्यक्ति अपने जीवन में समस्त नौ ग्रहों के दूषित प्रभावों से मुक्ति प्राप्त कर उन ग्रहों को अपने अनुकूल बनाने में सफल हो पाता है, और तब उसे जीवन में कभी भी किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं भोगना पड़ता।

व्यक्ति के जीवन में उन्नति के स्रोत हमेशा के लिए खुले रहते हैं, और वह कामयाबी की मंजिल की ओर बढ़ते हुए अपने जीवन में पूर्ण सुखी एवं सम्पन्न हो जाता है, क्योंकि इस साधना-शक्ति के द्वारा व्यक्ति/साधक एक बार में ही अपनी समस्त परेशानियों एवं बाधाओं से मुक्ति पा लेता है।

साधना-विधान

रात्रिकालीन इस साधना में बैठने से पहले साधक स्नानादि करके पूर्णतया शुद्ध होकर, पीली धोती धारण कर, ऊपर गुरु चादर ओढ़ लें, तथा अपने सामने किसी लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें और फिर आसन पर शांतचित्त तथा दत्तचित्त होकर बैठ जाएं, इसके पश्चात् तीन बार **'ॐ'** की ध्वनि का उच्चारण करने के बाद 5 मिनट तक गुरु का ध्यान करें, और प्रार्थना करें कि मुझे समस्त परेशानियों से मुक्ति प्राप्त हो, ऐसा कहकर उनसे आशीर्वाद ग्रहण करें।

तत्पश्चात् किसी प्लेट में कुंकुम से **'ॐ'** लिखकर, उसमें उस विशिष्ट चैतन्य पूरित **'रुद्राक्ष'** को स्थापित कर दें, फिर कुंकुम का तिलक करके उस पर **'ॐ चन्द्रमौलिश्वराय नमः'** मंत्र बोलते हुए 11 बार थोड़े-थोड़े चावल चढ़ाएं, तथा 11 बार इसी मंत्र से काले तिल, काली सरसों, काली मिर्च अलग-अलग चढ़ाएं, और धूप या अगरबत्ती जलाकर सरसों या तिल के तेल का दीपक जलाएं, ध्यान रहे कि पूरे साधना काल में दीपक प्रज्वलित रहे।

इसके पश्चात् दोनों हाथ जोड़कर ध्यान करें -

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे,
सर्पैर्भूषित कण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थ वैश्वानरे।
दन्तित्वक् कृत सुन्दराम्बर धरे त्रैलोक्य सारे हरे,
मोक्षार्थ कुरुचित्तवृत्तिमचलाम् अन्यैस्तु किं कर्मभिः ।।

चन्द्रमौलिश्वर शिव कामदेव को भस्म करने वाले हैं, आपके मस्तक से गंगा प्रवाहित हो रही है, कण्ठहार के रूप में सर्प को धारण किए हुए हैं, आपके तृतीय नेत्र से वैश्वानर अग्नि निकल रही है, हस्ति चर्म को सुन्दर वस्त्र के रूप में धारण किए हुए तीनों लोकों में अद्वितीय भगवान् शंकर, आप अपने **'चन्द्रमौलिश्वर'** स्वरूप में मेरे मन और बुद्धि को मोक्ष मार्ग की ओर प्रेरित करें अर्थात् मन और बुद्धि को सन्तुलित करें जहां आनन्द पूर्ण मोक्ष की प्राप्ति हो।

फिर साधक मन ही मन शिव के **'चन्द्रमौलिश्वर स्वरूप'** को नमस्कार कर **'रुद्राक्ष माला'** से निम्न मंत्र का 9 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।।ॐ शं चं चन्द्रमौलिश्वराय नमः।।

जप-समाप्ति के बाद गुरु-आरती करें, फिर **'चैतन्य पूरित रुद्राक्ष'** पर अर्पित सामग्रियों को रात्रि के समय पूरे घर व दुकान तथा जो भी अपके आवासीय या व्यापारिक संस्थान हैं, सब जगह छिड़क दें, जिससे दुष्ट ग्रहों का प्रभाव दूर हो सके तथा भविष्य में भी उन ग्रह-दोषों का प्रभाव न हो, इसके पश्चात् रुद्राक्ष तथा माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

यह साधना पूर्ण सफलतादायक है, जिसे पूर्ण श्रद्धा और लगन से करने की आवश्यकता है, तभी साधक को इससे निश्चित लाभ की प्राप्ति संभव है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौछावर - 670/-